टिप्पणी

214hi19

19

भारतीय अर्थव्यवस्था - एक विहंगम दृष्टि

भारत के नागरिक होने के नाते, आप सबके लिए, भारतीय अर्थव्यवस्था की जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है। जैसा कि आप इतिहास से भी जानते हैं कि भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र राष्ट्र हुआ। इससे पहले भारतीय उपमहाद्वीप लगभग 2 शताब्दियों तक अंग्रेजों के शासन में रहा जो अर्थव्यवस्था के सभी पहलूओं जैसे राजनीति, सभ्यता, सामाजिक रीति, अर्थव्यवस्था आदि को प्रभावित करने के लिए काफी लम्बी अवधि है। यहाँ हम केवल भारत की अर्थव्यवस्था के अध्ययन पर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप समझ सकेंगेः

- अंग्रेजों के 200 वर्षों के शासन काल के परिणामस्वरूप स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति;
- स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं में परिवर्तन;
- आर्थिक सुधारों को।

19.1 स्वतन्त्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति

भारत को अर्थव्यवस्था अंग्रेजों से उत्तराधिकार में मिली जो देश पर अपने लाभ के लिए शासन कर रहे थे। अंग्रेजों को कभी भी भारत और इसके नागरिकों के विकास में कोई रूचि नहीं थी। उनका उद्देश्य, भारत के संसाधनों का शोषण करना और जितना अधिक संभव हो सके उन्हें इंगलैंड को ले जाना था। यही कारण है कि रेलवे लाइने बिछाई गईं जिससे कि वस्तुओं को इंगलैंड को जहाजों से ले जाने के लिए बन्दरगाहों तक पहुंचाया जा सके। यद्यपि रेलवे का बनाना एक सकारात्मक योगदान था, इसका प्रयोग, प्रमुख रूप से अंग्रेजों के हितों के लिए किया गया।

अंगेजों के शासनकाल के पश्चात कुछ ध्यान देने योग्य आर्थिक विशेषताएं निम्न प्रकार थी :

(i) हस्तकला उद्योग का पतन

(ii) नकदी फसलों का उत्पादन

(iii) अकाल और भोजन की कमी

(iv) कृषि में मध्यस्थों की वृद्धि

आइये, इन सभी बिन्दुओं की हम एक-एक करके चर्चा करें।

19.1.1 हस्तकला उद्योग का पतन

अंग्रजों के भारत आने से पहले, राजा-महाराजा इस देश में राज्य कर रहे थे। वे स्थानीय दस्तकारों, बढ़ई कलाकारों, जुलाहों आदि जो सुन्दर पेन्टिंग बनाने में, दीवारों को सजाने में, कपड़ों के डिजाइन बनाने में,आभूषण बनाने, दर्जी का काम, फर्नीचर बनाने, खिलौने बनाने और पत्थर व धातु की मूर्तियाँ बनाने आदि में निपुण थे, उनके हितों का ध्यान रखते थे। ये लोग इन वस्तुओं के बनाने में अपने श्रम और स्थानीय कौशल का प्रयोग करते थे। ऐसी वस्तुओं को बनाने में बहुत अधिक समय और ध्यान के केन्द्रीयकरण की आवश्यकता थी। राजाओं के दरबार, देश के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार की सामग्रियों से निर्मित विभिन्न प्रकार की सजावट की वस्तुओं से भरे हुए थे। किन्तु जब अंग्रेज आए तो उन्होंने राजाओं को हराया और उनके राज्यों को जीत लिया। नगर बर्बाद कर दिए और इसके साथ ही हस्तकला उद्योगों को समाप्ति का सामना करना पड़ा।

भारतीय हस्तकला उद्योग का एक प्रमुख भाग कपड़े का हस्तकला उद्योग था। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य के बाद के भाग में इंगलैंड में उत्पादन प्रौद्योगिकी में परिवर्तन अनुभव किया जा रहा था। वस्तुओं के उत्पादन के लिए मानवीय श्रम का स्थान मशीनें ले रही थीं। वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन करना आसान हो रहा था। और अधिक फैक्ट्रियाँ आरम्भ हो रही थीं। अंग्रेज अपनी मशीनों द्वारा निर्मित कपड़ों को अधिक मात्रा में लाकर भारत में कम कीमतों पर बेच सकते थे। अंग्रेज सरकार ने केवल अंग्रेजी उत्पादकों की सहायता करने के लिए भी नीतियाँ बनाईं। इसलिए भारतीय हस्तकला उद्योग को हानि उठानी पड़ी।

पाठगत प्रश्न 19.1

1. भारत में कपड़े के हस्तकला उद्योग की उत्पादन विधि की अंग्रेजों की उत्पादन विधि से तुलना कीजिए।

आओ कुछ करें

एक संग्रहालय/एतिहासिक स्थल का निरीक्षण करो और उस समय की दस्तकारी का अध्ययन करो।

19.1.2 नकदी फसलों का उत्पादन

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इंगलैंड में औद्योकरण से सम्बन्धित परिवर्तन हो रहा था। इसलिए वहां फैक्ट्रियों में वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए कच्चे माल की आवश्यकता थी। कपड़ा बनाने के लिए कपास की आवश्यकता थी। इसी प्रकार कपड़ों पर छपाई के लिए नील की बहुत अधिक मांग थी। जूट, गन्ना, मूंगफली की भी इंगलैंड में बहुत अधिक मांग थी क्योंकि इन सबकी वहां फैक्ट्रियों में अति आवश्यकता थी। क्योंकि इन सबकी खेती भारत में होती थी, अंग्रेजों ने भारत के गरीब किसानों को इन फसलों को उगाने के लिए मुद्रा का लालच दिया जिससे कि वे उन्हें इंगलैंड भेज सकें। ये फसलें वस्तुओं के उत्पादन में कच्चे माल के रूप में प्रयोग की जाती हैं इसलिए ये नकदी फसलें कहलाती हैं।

मुद्रा के लालच में, भारतीय किसान नकदी फसलों का उत्पादन अंग्रेजों के लिए करते थे, जो उन्हें इंगलैंड में फैक्ट्रियों के लिए पहुंचाते थे। फैक्ट्रियों द्वारा निर्मित वस्तुओं को भारतीय बाजार में बिक्री के लिए भेजा जाता था। अब, अंग्रेज इन वस्तुओं को भारत के लोगों को बेचते थे और लाभ कमाते थे।

19.1.3 अकाल और भोजन की कमी

अंग्रेजी शासन का भारत में सबसे बुरा प्रभाव बार-बार अकाल पड़ना था। अकाल एक ऐसी स्थिति है जिसमें बहुत से लोगों को खाने के लिए भोजन नहीं मिलता और वे भूख और बीमारियों से मर जाते हैं। सम्पूर्ण अंग्रेजी शासन काल में लगभग 33 बार अकाल पड़ा। स्वतन्त्रता के केवल चार वर्ष पहले 1943 में, सबसे अधिक विनाशकारी अकाल बंगाल का अकाल था। इस बार, भोजन की कमी के कारण 15 लाख से भी अधिक लोग मारे गए। अकाल पड़ने के कुछ कारण निम्नलिखित थे।

(i) वर्षा के अभाव के कारण खाद्यान्नों के उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ा क्योंकि सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। कृषि वर्षा पर निर्भर करती थी।

(ii) अंग्रेज सरकार खाद्यन्नों का निर्यात अपने देश इंगलैंड तथा दूसरे स्थानों को करती रही जबकि खाद्यान्नों की अपने देश में भी आवश्यकता थी। अंग्रेज सरकार की खाद्यान्नों का दूसरे देशों को निर्यात कर केवल अपने लिए आय कमाने में रूचि थी। वह खाद्यान्नों का प्रयोग अपने सिपाहियों के भोजन के लिए भी करती थी जो विश्व के विभिन्न भागों में युद्ध लड़ रहे थे। आप जानते हो कि अंग्रेजों ने न केवल भारत को बल्कि विश्व के अन्य देशों को भी अधिकार में ले लिया था। इसलिए वे भारत से उन देशों को खाद्यान्न भेज रहे थे जहां उनके सैनिक भूमि क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए लड़ रहे थे।

(iii) गरीब लोगों के पास बाजार से खाद्यान्न खरीदने के लिए काफी मुद्रा नहीं थी।

(iv) जैसा कि ऊपर कहा गया है भारतीय किसानों को अपने खेतों में नकदी फसलों का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। इससे, खाद्यान्नों के उत्पादन में गिरावट आई क्योंकि उनकी खेती करने के लिए कम क्षेत्र उपलब्ध था।

पाठगत प्रश्न 19.2

1. अकाल का अर्थ बताओ।

2. अंग्रेज खाद्यान्नों का निर्यात क्यों कर रहे थे?

आओ कुछ करें

नकदी फसलों और खाद्यान्नों की एक सूची तैयार करो।

19.1.4 कृषि में मध्यस्थ

अंग्रेजों के शासन काल में, भारत के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर थी। इसलिए यह सरकार की आय का प्रमुख साधन था। अंग्रेजों ने दो प्रकार का भूमि लगान प्रारम्भ किया जैसेः

(i) **स्थायी बन्दोबस्त :** इसके अन्दर भूमि लगान की एकत्र की जाने वाली राशि स्थायी रूप से निश्चित थी।

(ii) **अस्थायी बन्दोवस्त :** इसमें 25 से 30 वर्ष की अवधि के पश्चात भूमि का लगान परिवर्तित कर दिया जाता था।

लगान एकत्र करने के लिए अंग्रेज सरकार ने भारत के पूर्वी भाग में **जमींदार**, पश्चिमी भाग में **महलवारी** और दक्षिणी भारत में **रैयतवारी** नियुक्त किए। ये लोग मध्यस्थ कहलाते थे क्योंकि ये जनसाधारण और अंग्रेज सरकार के बीच कार्य किया करते थे। उनका कार्य, लगान, कर आदि के रूप में गांव वालों, किसानों तथा अन्य परिवारों से आय एकत्र करना और उस आय को सरकार के पास जमा करना था। कुछ वर्षों में, ये लोग जनसाधारण के शोषण कर्ता बन गए क्योंकि वे निर्दयता के साथ उनकी गरीब दशा पर विचार किये बिना लगान वसूल करते थे। इसी प्रकार, कम वर्षा अथवा बाढ़ की स्थिति में खराब फसल होने पर भी कोई दया नहीं की जाती थी। गांव वालों से एकत्रित कुल आय में से ये मध्यस्थ एक भाग, अंग्रेज सरकार के पास जमा करने से पहले अपने पास रख लेते थे। भूमि का लगान एकत्र करने के अतिरिक्त अंग्रेज सरकार उन पर प्रशासन को चलाने के लिए भी निर्भर करती थी। इस प्रकार जमींदार, महलवारी और रैयतवारी क्रमशः अपने क्षेत्रों में लघु शासक बन गए। जो लोग भूमि का लगान नहीं दे पाते थे वे उन व्यक्तियों की सम्पति बलपूर्वक ले जाते थे। इस प्रकार, ये मध्यस्थ, अंग्रेज सरकार के आशीर्वाद तथा जनसाधारण की लागत पर धनी और शक्तिशाली हो गए।

पाठगत प्रश्न 19.3

1. स्थायी और अस्थायी बन्दोबस्त में भेद कीजिए।
2. जमींदारों के विषय में तीन वाक्य लिखो।

19.2 अंग्रजों के शासन का सकारात्मक योगदान

अंग्रेजों के शासन काल में कुछ सकारात्मक कार्य हुए। रेलवे, जो आज आप देखते हो वह 1850 में अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई। 1850 से 1855 के बीच पहला पटसन का कारखाना, पहली कपड़ा मिल और पहली कोयले की खान की स्थापना हुई। बाद के वर्षों में, रेलवे लाइन की लम्बाई और ऊपर कहे गए कारखानों की संख्या बढ़ती रही। अंग्रेज सरकार ने देश में दूर-संचार सेवा, तार और डाकघरों की भी स्थापना की।

19.3 स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं में परिवर्तन

स्वतंत्रता के पश्चात भारत के इतिहास में एक नए युग का प्रादुर्भाव हुआ, स्पष्ट रूप से इसलिए क्योंकि भारत का शासन चलाना इसके अपने लोगों का उत्तरदायित्व हो गया। ब्रिटिश सरकार से भिन्न, भारत की सरकार का उद्देश्य, भारत को विकास के ऊँचे स्तर पर ले जाना और इसके सभी नागरिकों का कल्याण था। वर्ष 2010 तक, भारत सरकार, भारत पर शासन के 60 से अधिक वर्ष पूरे कर चुकी है। मूल्यांकन करने का तथा उसी के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन करने का, यह एक काफी लम्बा समय है, जो निम्न प्रकार हैं :

प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर, प्रति व्यक्ति आय में धीमी वृद्धि, जनसंख्या का भारी दबाव, गरीबी का अस्तित्व, कृषि पर निर्भरता और विकास के लिये योजना बनाना।

हम इनकी चर्चा निम्न प्रकार से एक-एक करके करेंगे।

1. प्रति व्यक्ति आय का निम्न स्तर

प्रति व्यक्ति आय की गणना राष्ट्रीय आय को जनसंख्या से भाग देकर की जाती है। एक व्यक्ति की आय उसके रहन सहन के स्तर का मुख्य सूचक है। प्रति व्यक्ति आय, अर्थव्यवस्था में एक वर्ष में, एक व्यक्ति द्वारा अर्जित औसत आय का बोध कराती है। भारत की वर्ष 2009-10 की प्रति व्यक्ति आय 33731 रु. थी। यह लगभग 2811 रु. मासिक आती है अर्थात 33731/12 = 2811 रु.।

यह राशि एक अच्छा जीवन बिताने के लिए बहुत कम है। एक व्यक्ति को रहने के लिए एक कमरा, पहनने के लिये कपड़े और पोषाक की सामग्री तथा खाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। ये सभी वस्तुएं बाजार से कुछ कीमत का भुगतान कर खरीदी जाती है। यदि किसी व्यक्ति के पास रहने के लिए उसका पैतृक मकान है, वह किराये का भुगतान नहीं करता फिर भी उसे अपने लिए कपड़े और भोजन की आवश्यकता होती है। क्योंकि खाद्यान्न, सब्जी, कपड़े

आदि की कीमत ऊँची है, क्या आप समझते हैं कि 2811 रु. इन खर्चों के पूरा करने के लिए काफी हैं।

आओ कुछ करें

बाजार जाओ और चावल, गेहूँ, आटा, आलू और प्याज की कीमत ज्ञात करो। इन वस्तुओं की वह मात्रा ज्ञात करो, जिसका आपने पिछले महीने में उपभोग किया। तब इन वस्तुओं पर किया गया व्यय ज्ञात करो। इसी प्रकार, इन वस्तुओं पर अपने परिवार का व्यय ज्ञात करो। तब, सोचो, इन खर्चों के पूरा करने के लिए आपकी आय कितनी होनी चाहिए।

2. प्रति व्यक्ति आय में धीमी वृद्धि

भारत में प्रति व्यक्ति आय न केवल कम है किन्तु बहुत धीमी गति से भी बढ़ रही है। संवृद्धि/वृद्धि से अभिप्राय समय के साथ-साथ वृद्धि से है। हम क्यों चाहते हैं कि हमारी आय प्रति वर्ष बढ़े? इसके कुछ कारण हैं।

प्रथम, हमारी मांगे समय के साथ-साथ बढ़ रही हैं। अधिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए, हमें अधिक आय की आवश्यकता होती है। अपना ही उदाहरण लीजिए। क्या आप सिनेमा हाल में सिनेमा (चलचित्र) नहीं देखना चाहते? क्या आप अच्छे कपड़े नहीं पहनना चाहते? क्या आप एक होटल में खाना नहीं खाना चाहते? क्या आप एक स्टेडियम में आई.पी.एल. क्रिकेट मैच नहीं देखना चाहते? क्या आप एक महाविद्यालय में पढ़ना नहीं चाहते? क्या आप, अपने लिए एक मोबाइल फोन नहीं चाहते, आदि। यह सूची अंतहीन हो सकती है। किन्तु ये वस्तुएं निःशुल्क प्राप्त नहीं होतीं। इसलिए, इन आवश्यकताओं का पूरा करने के लिए आपको पहले से अधिक आय की आवश्यकता होती है।

द्वितीय, अधिक आय कमाने का दूसरा कारण यह है कि जो वस्तुएं आप बाजार में खरीदते हो, उनकी कीमतें भी बढ़ रही हैं। इसलिए, उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं के लिए, जिनका आप उपभोग करते हो, आपको अधिक मुद्रा का भुगतान करना पड़ता है। हाल ही में, पैट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़ाई गई थीं। दिल्ली में कीमतें लगभग 5 रु. प्रति लीटर बढ़ाई गई थीं। मान लो, एक व्यक्ति ट्रक में जूते भरकर दिल्ली से शिमला ले जाता है। वह शिमला के बाजार में 300 रु. प्रति जोड़ी की दर से जूते बेचता है। कीमत बढ़ने से पहले, उसका डीजल पर व्यय लगभग 3100 रु. प्रति फेरा था। किन्तु कीमत बढ़ने के कारण, उसका डीजल पर व्यय बढ़कर, मानलो 3700 रु. हो जाता है। वह इन अतिरिक्त 600 रु. का प्रबन्ध कैसे करेगा। एक तरीका यह है कि एक जोड़ी जूते की कीमत बढ़ाकर 300 से 325 रु. कर दी जाए। यदि आप शिमला में रह रहे हैं और जूते खरीदते हैं तो आपको एक जोड़ी जूते के पहले से 25 रु. अधिक देने पड़ेगे। ये 25 रु. अधिक आप कहां से लायेंगे? व्यय में इस वृद्धि को पूरा करने के लिए आपकी आय में वृद्धि होनी चाहिए। क्योंकि, आपको और वस्तुओं पर भी व्यय करना होता है और दूसरी वस्तुओं की कीमतें भी इसी प्रकार बढ़ रही हैं, आपकी आय में भी अधिक तीव्र गति से वृद्धि होनी चाहिए। किन्तु, विडम्बना यह है कि भारत में प्रति व्यक्ति आय इच्छित ढ़ंग से नहीं बढ़ी है।

हमने अभी बताया कि वर्ष 2009-2010 में प्रति व्यक्ति आय 33731 रु. थी। क्या आप जानते हो कि पिछले वर्ष 2008-2009 में यह राशि क्या थी। यह 31801 रु. थी। इसका अभिप्राय यह है कि एक व्यक्ति की आय केवल 1930 रु. बढ़ी। प्रति माह वृद्धि क्या है? यह लगभग 160 रु. प्रति माह थी। क्या यह राशि, कीमतों के वृद्धि के कारण, आपके द्वारा बहुत सी वस्तुओं पर अधिक व्यय को पूरा करने के लिए, काफी है? याद कीजिये, कि आपको केवल जूतों पर 25 रु. का अधिक भुगतान करना पड़ेगा। आपको बहुत सी अन्य वस्तुओं की भी आवश्यकता होती है जिनके लिए आपको अधिक भुगतान करना पड़ता है। इसलिए 160 रु. की वृद्धि आपकी विद्यमान आवश्यकताओं को भी पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है, बढ़ी हुई आवश्यकताओं के विषय में क्या कहा जा सकता है? हम प्रति व्यक्ति आय पर आर्थिक सर्वेक्षण द्वारा दिए गए आंकड़े निम्न सारणी में पुनः प्रस्तुत कर रहे हैं।

सारणी 19.1 भारत में प्रति व्यक्ति आय

वर्ष	प्रति व्यक्ति आय (रुपये)	प्रति माह वृद्धि (रुपये में)
2008-09	31801	–
2009-10	33731	160

तृतीय, और अन्तिम, हम अपनी आय में वृद्धि चाहते हैं क्योंकि हम एक दूसरे की आवश्यकता पड़ने पर सहायता करना चाहते हैं या एक दूसरे को प्रसन्न करना चाहते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम एक समाज में अपने सम्बन्धियों, मित्रों और अन्य व्यक्तियें के साथ रहते हैं। हमें, हर समय, एक दूसरे का सहयोग और सहायता की आवश्यकता होती है। क्या आपने, आवश्यकता के समय, किसी मित्र की सहायता की है? आप किसी निर्धन व्यक्ति की सहायता करना चाहते हैं जिसे खाने के लिए भोजन की आवश्यकता है। आपको अपने किसी मित्र के लिए, आवश्यकता होने पर, पुस्तक खरीदनी पड़ सकती है। आपको अपने छोटे भाई या बहन के लिए चाकलेट खरीदने की आवश्यकता हो सकती है। इन सभी मामलों में आपको, अपनी स्वयं की आवश्यकताओं को पूरा करने के पश्चात् और अधिक मुद्रा की आवश्यकता हो सकती है। किन्तु यदि हम, अपनी बढ़ी हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, अपने स्वयं के लिए अधिक आय नहीं कमा सकते, तो हम, अन्य व्यक्तियों, जिनकी हम सहायता करना चाहते हैं, की कैसे सहायता कर सकते हैं?

पाठगत प्रश्न 19.4

1. सारणी 19.1 की सहायता से वर्ष 2008-09 की तुलना में 2009-10 में प्रति व्यक्ति आय में प्रतिशत वृद्धि ज्ञात करो (अपनी गणित की योग्यता का प्रयोग करो)।
2. प्रति व्यक्ति आय की परिभाषा दो।
3. वर्ष 2009-2010 में भारत की प्रति व्यक्ति आय क्या थी?

3. जनसंख्या का भारी दबाव

भारतीय अर्थव्यवस्था में जनाधिक्य है। पिछले 60 वर्षों में यह तीन गुनी से अधिक बढ़ चुकी है। स्वतंत्रता के समय, 1947 में जनसंख्या 35 करोड़ थी। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 121 करोड़ है। विश्व में यह केवल चीन से दूसरे स्थान पर है और भविष्य में चीन से ऊपर भी जा सकती है। हम अधिक जनसंख्या से क्यों चिंतित हैं? सीधी सी बात है, अधिक व्यक्तियों से अभिप्राय खाने के लिए अधिक मुंह हैं। यह इस बात का संकेत है कि अधिक खाद्यान्नों का उत्पादन किया जाय। क्योंकि हर वर्ष जनसंख्या बढ़ रही है इसलिए हर वर्ष खाद्यान्नों का अधिक उत्पादन होना चाहिए। यह आसान कार्य नहीं है। क्योंकि कृषि के लिए भूमि के क्षेत्र में उस अनुपात में वृद्धि नहीं हो रही है। इसलिए खाद्यान्नों का उत्पादन जनसंख्या में वृद्धि से मेल नहीं खाता तो प्रति व्यक्ति खाद्यान्नों की उपलब्धता घट जायेगी। संपूर्ण भारत को एक परिवार मानकर यह कह सकते हैं कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए खाने के लिए कम भोजन मिलेगा। क्या यह चिन्ताजनक बात नहीं है?

भोजन के अतिरिक्त अधिक जनसंख्या के लिए, अधिक वस्त्र, अधिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं, अधिक मकानों, सड़कों और किस वस्तु की आवश्यकता नहीं है? इन्हें कौन उपलब्ध करायेगा? क्या हमारी सरकार के पास इन सभी सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं? शायद नहीं। वरना, शहरों में मलिनावास तथा सड़कों पर भिखारी नहीं होते।

भारतीय जनसंख्या के विषय में सकारात्मक बात यह है कि युवकों की संख्या संसार के अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है। लगभग आधी जनसंख्या 0-25 वर्ष के आयु वर्ग में है। 121 करोड़ में से लगभग 78.5 करोड़ व्यक्ति 35 वर्ष से कम आयु के हैं। इससे क्या अभिप्राय है? युवक ऊर्जा और शक्ति से पूर्ण होते हैं और उनसे बेहतर कार्य करने की आशा की जाती है क्योंकि उनमें अधिक कार्य करने की क्षमता होती है। यह निम्न आलंबन/आश्रित अनुपात का भी सूचक है।

क्या आप जानते है कि भारत में सबसे अधिक जनसंख्या वाले तीन राज्य कौन से हैं। वे हैं उत्तर प्रदेश, इसके पश्चात् महाराष्ट्र और फिर बिहार। यह जानना रूचिकर है कि उत्तर प्रदेश की जनसंख्या लगभग ब्राजील की जनसंख्या के बराबर है जो भूमि के क्षेत्र के अनुसार संसार के बड़े देशों में से एक है। जबकि महाराष्ट्र की जनसंख्या मैक्सिकों की जनसंख्या के बराबर है। इसे प्रमाणित करने के लिए नीचे सारणी 19.2 को देखो।

वास्तव में भारत की कुल जनसंख्या संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, बंगलादेश की जनसंख्या को मिलाकर लगभग उसके बराबर है।

सारणी 19.2

2011 की जनगणना के अनुसार भारत और राज्यों की जनसंख्या (करोड़ में)

उत्तर प्रदेश - 19.9 महाराष्ट्र - 11.2 भारत - 121	ब्राजील - 19.07 मैक्सिको - 11.2

4. गरीबी का अस्तित्व

संसार के लगभग एक तिहाई गरीब लोग भारत में रहते हैं। सड़कों पर भिखारियों को देखिए। कस्बों और शहरों में मलिनावासों, बच्चों का खेतों में, या गली के ढाबों में, या दूसरों के घरों में या फैक्ट्रियों आदि में काम करना, ये देश में गरीबी के चिन्ह हैं। नीचे सारणी 19.3 को देखो। भारत की 30 करोड़ से अधिक जनसंख्या गरीबी से ग्रस्त है जो कि कुल जनसंख्या का लगभग 27.5 प्रतिशत है। इनमें से, 20 करोड़ से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। शेष शहरी क्षेत्रों अर्थात कस्बों और शहरों में रहते हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में, उड़ीसा सबसे अधिक गरीबी से ग्रस्त है। क्योंकि इसकी कुल जनसंख्या के 46 प्रतिशत लोग गरीब हैं जो सभी राज्यों में सबसे अधिक है। इसके पश्चात छत्तीसगढ़ और फिर बिहार आता है। गरीब लोगों की संख्या के संबंध में उत्तर प्रदेश में गरीब लोगों की संख्या अधिकतम है। पंजाब, हरियाणा और आंध्र प्रदेश को देखो। वे गरीबी से सबसे कम प्रभावित हैं क्योंकि इन राज्यों में गरीब लोगों का प्रतिशत, उड़ीसा, बिहार ओर उत्तरप्रदेश की तुलना में कम है।

सारणी 19.3
भारत के कुछ राज्यों में गरीबी की स्थिति

राज्य	प्रतिशत गरीब लोग	गरीब लोगों की कुल संख्या (लाख में)
उड़ीसा	46	179
छत्तीसगढ़	41	91
बिहार	41	369
उत्तर प्रदेश	35	590
आंध्र प्रदेश	16	126
हरियाणा	14	32
पंजाब	08	22
कुल भारत	**27.5**	**3017**

स्रोत : *आर्थिक सर्वेक्षण*

जब आप सारणी 19.3 का अध्ययन करते हैं तो आप इससे क्या निष्कर्ष निकालते हैं? गरीब लोगों का प्रतिशत बताता है कि 100 व्यक्तियों में से कितने गरीब हैं जबकि गरीबों की कुल संख्या निरपेक्ष संख्या है। देखो कि उड़ीसा में 179 लाख गरीब व्यक्ति हैं जो कि उत्तर प्रदेश के 590 लाख से बहुत कम है। किन्तु उड़ीसा में प्रति 100 व्यक्तियों में से 46 गरीब हैं जबकि उत्तर प्रदेश में प्रति 100 व्यक्तियों में से 35 गरीब हैं। क्योंकि उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या उड़ीसा से अधिक है, गरीब लोगों की निरपेक्ष संख्या भी उत्तर प्रदेश में उड़ीसा से अधिक है। अधिक प्रतिशत होने के कारण उड़ीसा, उत्तर प्रदेश से अधिक गरीबी से ग्रस्त है।

गरीबी मनुष्यता पर एक अभिशाप है। एक गरीब व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं या अनिवार्यताओं को बाजार से खरीदने में समर्थ नहीं हो सकता। वह दिन में दो वक्त का भोजन करने के योग्य भी नहीं है ओर न ही वह उचित वस्त्र पहन सकता है। एक गरीब व्यक्ति के पास रहने के लिए आश्रय नहीं है या कच्चा मकान है। उसके लिए शिक्षा प्राप्त करना, स्वास्थ्य की रक्षा करना कठिन है। ऐसा क्यों होता है? इसके कई कारण हो सकते हैं।

प्रथम, गरीबी से ग्रस्त व्यक्ति या तो बेरोजगार हैं या अपने वर्तमान व्यवसाय से बहुत कम आय प्राप्त करता है जो उसकी मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।

द्वितीय, उस व्यक्ति का दूसरों के द्वारा, जाति, धर्म या लिंग के आधार पर शोषण किया जा रहा है।

तृतीय, व्यक्ति गरीब इसलिए हो गया है कि उसके पास, भूमि या मकान आदि के रूप में कोई सम्पति नहीं है। जिन लोगों को उत्तराधिकार में अपने पूर्वजों से सम्पति मिली है, उन्हें दूसरे लोगों की अपेक्षा, जिनके पास सम्पति नहीं है, कुछ लाभ प्राप्त हैं।

चौथा, शायद सरकार के प्रयास प्रभावपूर्ण नहीं रहे हैं। भ्रष्टाचार, निर्णय लेने में विलम्ब, सरकार द्वारा गरीबी दूर करने में रुकावट रहे हैं। तथापि, गरीबी का अस्तित्व केवल सरकार की ही असफलता नहीं है किन्तु व्यक्तियों और समाज की भी असफलता है, जिन्हें एक दूसरे की सहायता और सहयोग करना चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति उत्तम जीवन बिता सके।

हम गरीबी की अवधारणा और सरकार द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिए उठाए गए कदमों के विषय में पाठ 22 में चर्चा करेंगे।

पाठगत प्रश्न 19.5

1. आपके विचार में क्या गरीबी और बेरोजगारी आपस में सम्बन्धित हैं?
2. सारणी 19.3 में दिए गए आंकड़ों से उड़ीसा और पंजाब की तुलना करो।

आओं कुछ करें

सारणी 19.3 में दिए गए आंकड़ों से राज्यों की कुल जनसंख्या की गणना करो। अपने गणित के ज्ञान का प्रयोग करो।

5. कृषि पर निर्भरता

किसी अर्थव्यवस्था में अपनी आजीविका कमाने के लिए व्यक्ति विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं, जैसे कृषि, उद्योग और सेवाएं (इसका अध्ययन हम पाठ 20 में विस्तार से करेंगे) भारतीय अर्थव्यवस्था, परम्परागत रूप से, कृषि पर आधारित है। 1951 में, पहली योजना के प्रारम्भ

में, 70 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि और संबंधित गतिविधियों में लगे हुए थे। यद्यपि यह प्रतिशत कम हो गया है, अब भी इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ में अर्थात वर्ष 2001 में जनसंख्या का लगभग 60 प्रतिशत भाग कृषि पर निर्भर करता था।

7. विकास के लिये योजना बनाना

स्वतन्त्रता के पश्चात, भारतीय अर्थव्यवस्था की, आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया द्वारा विकास की प्राप्ति का लगातार प्रयास करना, मुख्य विशेषता रही है। पिछले 60 वर्षों से यह एक बहुत ही सकारात्मक घटना रही है।

भारत सरकार ने, 1951 में पहली पंचवर्षीय योजना आरम्भ कर, पंचवर्षीय योजनाओं को अपनाया। पहली योजना की अवधि 1951 से 1956 थी। इसी के अनुसार दूसरी पंचवर्षीय योजना 1956 में आरंभ हुई तथा 1961 में समाप्त हुई। और इसी प्रकार। भारत में विभिन्न योजनाओं की समय अवधि जानने के लिए नीचे सारणी 19.4 को देखो।

सारणी 19.4

योजना	भारत में योजना अवधि
पहली	1951-1956
दूसरी	1956-1961
तीसरी	1961-1966
वार्षिक योजनाएं	1966-1967, 1967-68, 1968-69
चौथी	1969-1974
पांचवी	1974-79
वार्षिक योजना	1979-80
छठी	1980-1985
सातवीं	1985-1990
वार्षिक योजनाएं	1990-91, 1991-92
आठवीं	1992-1997
नौवी	1997-2002
दसवीं	2002-2007
ग्यारहवीं	2007-2012

नियोजन से आपका क्या अभिप्राय है? नियोजन से अभिप्राय भविष्य में कुछ करने के लिए तैयारी करना है। इसका तात्पर्य आपके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की समस्या को हल करने से हैं।

आप स्वयं अपना उदाहरण ले सकते हो। मान लो, आपको अगले वर्ष दसवीं कक्षा की परीक्षा देनी है। मान लो, आज से आप के पास दस महीनें हैं। आप इसके लिए क्या करोगे। स्पष्ट रूप से, आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक क्रमबद्ध ढंग से तैयारी करोगे। अर्थात अपनी परीक्षा अच्छे अंकों से पास करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आपकी तैयारी में निम्न बातें शामिल होंगी।

(i) पुस्तकें खरीदने के लिए मुद्रा का प्रबन्ध करना।

(ii) प्रति दिन पढ़ने और दूसरे कार्यों के लिए समय का आबंटन करना।

(iii) प्रतिदिन प्रत्येक विषय अर्थात अर्थशास्त्र, गणित, जीवविज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी इत्यादि के लिए समय का आबंटन करना।

(iv) अपनी तैयारी का, प्रति माह या प्रति दो या तीन माह में मूल्यांकन करना।

इसी प्रकार, भारत सरकार, अपनी आर्थिक और दूसरी समस्याओं को हल करने के लिए योजना बनाती रही है। नियोजन अनिवार्य है क्योंकि समस्याओं का हल एक या दो दिन में आसानी से नहीं किया जा सकता । खाद्यान्नों के उत्पादन बढ़ाने की समस्या का उदाहरण लीजिए। इसमें संसाधनों के, मानव शक्ति, कच्चा माल, मशीनें, मुद्रा आदि के रूप में आबंटन की आवश्यकता है जिनका उचित ढंग से प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे उनकी कम से कम बर्बादी हो। इसी प्रकार, बहुत सी अन्य समस्याएं भी हैं जैसे प्रत्येक वर्ष बहुत से युवकों को रोजगार या नौकरी देने की समस्या, गरीब लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने की समस्या, ग्रामीण जनसंख्या को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना, भारत के विभिन्न गांव और कस्बों को जोड़ने के लिए सड़कों का निर्माण करना आदि। आप इस प्रकार की अन्य हजारों समस्याएं गिन सकते हैं।

भारत ने पंचवर्षीय योजनाएं अपनाई हैं ताकि किसी विशेष योजना के आरम्भ में यह घोषणा की जा सके कि आने वाले पांच वर्षों में कौन सी समस्याएं लेनी हैं और समय अवधि के अन्त में सम्पूर्ण स्थिति और उस दिशा में की गई उन्नति का पुनरावलोकन किया जा सके। उपर्युक्त सारणी 19.4 में पंचवर्षीय योजनाओं की समय अवधि दी गई है। हमने दस पंचवर्षीय योजनाएं समाप्त कर ली हैं। ग्यारहवी योजना वर्ष 2012 में पूरी होगी। आप देख सकते हैं कि 1966-69 की अवधि में कोई पंचवर्षीय योजना नहीं थी, केवल वार्षिक योजनाएं थीं। यह पंचवर्षीय योजना को चलाने के लिए मौद्रिक और अन्य संसाधनों की कमी के कारण हुआ। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि भारत ने 1962 में चीन से और 1965 में पाकिस्तान से युद्ध लड़ा जिसके लिए सरकार को अपने संसाधनों को हटाकर इन लड़ाइयों को लड़ने के लिए लगाना पड़ा। भारत को, सूखे की स्थिति का भी सामना करना पड़ा जिसने इस अवधि में हमारा कृषि में उत्पादन कम कर दिया। इसलिए पंचवर्षीय योजना चलाना कठिन था और भारत को वार्षिक योजनाओं से काम चलाना पड़ा। जब स्थिति बेहतर हो गई तो 1969 में दोबारा पंचवर्षीय योजनाएं, चौथी पंचवर्षीय योजना के साथ पुनः आरम्भ की।

1979 में केन्द्र में सरकार बदल गई थी। इसलिए छठी पंचवर्षीय योजना 1980 से आरम्भ की गई और वर्ष 1979-80 को वार्षिक योजना में बदल दिया गया।

योजनाओं पर व्यय : प्रत्येक योजना में सरकार संसाधनों का आबंटन विभिन्न क्षेत्रकों जैसे कृषि उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार सामुदायिक विकास और अन्य सामाजिक क्षेत्रकों में करती है। इसका उद्देश्य दिए गए संसाधनों को उस अवधि में सरकार द्वारा निश्चित किए गए क्षेत्र के विकास के लक्ष्यों के लिए प्रयोग करने से है। उदाहरण के लिए कृषि के संसाधनों का प्रयोग भूमि की उत्पादकता बढ़ाने, सिंचाई की सुविधा बढ़ाने आदि के लिए किया जा सकता है। इसी प्रकार शिक्षा के लिए संसाधनों का प्रयोग स्कूल की इमारत बनवाने, प्रतिभाशाली छात्रों को छात्रवृत्ति देने आदि पर किया जा सकता है। हम संसाधनों को रुपयों के रूप में व्यक्त कर सकते हैं। पहली पंचवर्षीय योजना में कुल राशि 2070 करोड़ रु. विभिन्न क्षेत्रकों का व्यय पूरा करने के लिए आबंटित की गई थी। ग्यारहवी पंचवर्षीय योजना में, जो वर्ष 2012 में पूरी होनी है। विभिन्न क्षेत्रों पर व्यय करने के लए 36,44,718 करोड़ रु. की राशि प्रस्तावित की गई है। पहली योजना से ग्यारहवीं योजना में व्यय में बहुत अधिक वृद्धि के प्रमुख कारण हैं :

(अ) जनसंख्या में वृद्धि

(ब) आवश्यकताओं में वृद्धि

(स) बाजार में कीमतों में वृद्धि

आओ कुछ करे

1. आप एक एकड़ भूमि के प्लाट पर, पहले वर्ष गेहूँ का उत्पादन 5 क्विंटल से बढ़ाकर इस वर्ष 8 क्विंटल करना चाहते हैं। आप इस लक्ष्य को पूरा करने की योजना कैसे बनाओगे।

आपने क्या सीखा

- भारतीय अर्थव्यवस्था की कहानी की दो भिन्न अवस्थायें हैं। एक, अर्थव्यवस्था अंग्रेजी शासन काल के दौरान और दो, अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता के पश्चात्।
- अंग्रेजी शासन काल में, भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रयोग अंग्रजों द्वारा अपने लाभ के लिए किया गया। परिणामस्वरूप, अर्थव्यवस्था को अकाल और मध्यस्थों द्वारा शोषण को सहन करना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता के समय भारत में बड़े पैमाने पर निर्धनता थी।

- स्वतंत्रता के पश्चात स्थिति में लोगों की आशाओं के अनुरूप परिवर्तन नहीं हुआ। भारत की अब भी प्रतिव्यक्ति आय का निम्न स्तर, समय के अनुसार इसमें धीमी वृद्धि, गरीबी, जनसंख्या के भारी दबाव आदि के लिये जाना जाता है।
- किन्तु भारत को, अपनी पंचवर्षीय योजनाओं, जो कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लक्ष्य निर्धारित करती है, पर आशा है।

पाठान्त प्रश्न

1. अस्थायी बन्दोबस्त से आपका क्या अभिप्राय है?
2. अंग्रेज नकदी फसलों की खेती क्यों कराना चाहते थे?
3. भारत में अकाल पड़ने के दो कारण दो।
4. भारतीय जनसंख्या का एक सकारात्मक पहलू बताओ।
5. प्रति व्यक्ति आय की परिभाषा से क्या आप इसमें धीमी वृद्धि का एक कारण बता सकते हो।
6. अंग्रेजी शासन काल में पड़े अकालों का एक संक्षिप्त विवरण दो। इन अकालों के पड़ने के क्या कारण थे?
7. मध्यस्थ कौन थे? उनके द्वारा अदा की गई भूमिका का वर्णन कीजिये।
8. भारत सरकार ने नियोजन क्यों अपनाया?
9. क्या आपके विचार में भारत एक गरीब देश है? अपने उत्तर के पक्ष में कारण दीजिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 19.1

1. भारतीय कपड़ा उद्योग श्रम का प्रयोग करता था जबकि अंग्रजी कपड़ा उद्योग मशीनों का प्रयोग करता था।

पाठगत प्रश्न 19.2

1. अकाल से अभिप्राय भोजन की कमी की स्थिति से है जो भुखमरी और बहुत से व्यक्तियों की मृत्यु का कारण बनती है।
2. अंग्रेज, खाद्यान्नों का निर्यात, आय कमाने के लिए कर रहे थे।

पाठगत प्रश्न 19.3

1. स्थायी बन्दोबस्त से अभिप्राय भूमि का लगान स्थायी रूप से निश्चित करने से है।

   अस्थायी बंदोबस्त से अभिप्राय प्रत्येक 25-30 वर्षों में भूमि के लगान में परिवर्तन करने से है।

2. भारत के पूर्वी राज्यों में अंग्रेजों ने जमींदारों को नियुक्ति की। उनका कार्य लोगों से लगान वसूल करना था। वे स्थानीय प्रशासन को चलाने के भी उत्तरदायी थे।

पाठगत प्रश्न 19.4

1. 6.06 प्रतिशत

2. प्रतिव्यक्ति आय = $\frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$

3. 33,731 रु.

पाठगत प्रश्न 19.5

1. हाँ

2. उड़ीसा की 46 प्रतिशत जनसंख्या गरीब है जबकि पंजाब में केवल 8 प्रतिशत जनसंख्या गरीब है। इसलिए पंजाब उड़ीसा से धनी है।